# U.G. 2nd Semester Examination - 2021

## HINDI

### [PROGRAM]

**Course Code: BHINCCRT 201**

**Course Title: मध्यकालीन कविता**

Full Marks : 40 Time : 2 Hours

*The figures in the right-hand margin indicate marks.*

*Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.*

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दस** प्रश्नों के उत्तर दिजिए : 1×10=10

क) कबीरदास की काव्यभाषा कौन-सी थी?

ख) विनयपत्रिका किसकी रचना है?

ग) बिहारी किस राजा के दरवारी कवि थे?

घ) 'अष्टछाप' में कितने कवि शामिल है?

ङ) सूरदास के गुरु का क्या नाम था?

च) ''अखियाँ हरि दरसन की भूखी। कैसे रहै रूप-रस राँची ये बतियाँ सुनि रुरनी।।''—उपर्युक्त पंक्तियाँ किस कवि की हैं?

छ) तुलसीदास भक्तिकाल की किस शाखा से संबद्ध थे?



ज) कबीर के पदों का संग्रह किस नाम से प्रसिद्ध है?

झ) बिहारी की काव्यभाषा क्या है?

ञ) निर्गुण भक्तिशाखा से क्या अभिप्राय है?

ट) भ्रमरगीत के पदों में किनके किनके बीच संवाद दर्शाया गया है?

ठ) बिहारी की रचनाओं की केन्द्रीय विषयवस्तु क्या है?

ड) कबीर ने निंदकों के विषय में क्या कहा है?

ढ) मध्यकालीन भक्तिकाव्य में 'वात्सल्य रस सम्राट' की उपाधि से किस कवि को अलंकृत किया गया है?

ण) भ्रमरगीतसार की विषयवस्तु क्या है?

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2×5=10

क) 'अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल' में कवि का मूल भाव क्या है?

ख) 'भक्ति आँदोलन और सूरदास का काव्य' तथा 'कबीर' पुस्तक के रचनाकार कौन-कौन हैं?

ग) बीजक का क्या अर्थ है?

घ) कबीर की वाणियों का संग्रह किसने किस नाम से किया है?

ङ) सूरदास किनके शिष्य थे? सूरदास की प्रमुख रचना का नाम लिखिए।

च) भक्तिकाल की किन्हीं दो विशेषताएँ लिखिए।

छ) कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' किसने किस आधार पर कहा?

ज) 'पुष्टिमार्ग को जहाज' की उपाधि से किसने किसको विभूषित किया?

3. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 5×2=10

क) अखियाँ हरि दरसन की भूखी

कैसे रहैं रूप-रस राँची ये बतियाँ सुनि रूखी।

अवधि गनट इकटक मग जोवत तब ये तौ नहीं सूखी।

अब इन जोग संदेसनि ऊधो, अति अकुलानी दुखी।।

वह मुख फेरि दिखावहु दुहि पय पिवत पतूखी।

सूर जोग जनि नाव चलावहु ये सरिता है सुखी।।

ख) मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।

जा तन की झाँई परे स्याम हरित दुति होय।।

ग) घन घमंड नभ गरजत घोरा। प्रिया हीन डरपत मन मोरा।।

दामिनि दमक रह न घन माही। खल कै प्रीति जथा थिर नाहिं

बरषहिं जलद भूमि निअयएँ। जथा नवहिं बुध विद्या पाएँ।



बूँद अघात सरहिं गिरि कैसे। खल के वचन संत सह जैसे।।

छद्र नदी भरि चली तोराई। जस थोरेहुँ धन खल इतराई।।

भूमि परत भा ढाबर पानी। जनु जीवहि माया लपटाती।।

समिटि समिटि जल भरहिं तलावा। जिसि सदगुन सज्जन वहिं आवा।।

हरित भूमि तृन संकुल समुसि परहिं नहीं पथ।

जिमि पाखंड बाद में गुप्त होहि सदग्रंथ।।

4. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 10×1=10

क) सूरदास की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।

ख) पठित पदों के आधार पर एक समाज सुधारक के रूप में कबीरदास का मुल्यांकन कीजिए।

ग) ''गोस्वामी तुलसीदास समन्यवादी कवि है।''—इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

———————